जीवन श्रध्धा से मृत्यु श्राध्ध तक

जिन्दा माता-पिता की सेवा करके आशिर्वाद प्राप्त करलो,
मृत्यु के बाद तर्पण करने से कोई फायदा नही ।

भगवान पथ्थरकी मूर्ति में भी नही, भगवान मन्दिर में भी नही हे,
वो तो हमारे घरमें माता-पिता के स्वरुप में स्वयंम हे !!!

मातृभूमि, मातृभाषा ओर माँ कभी भूल नही पाओगे ।
इसलिए कंप्यूटर में भी ' मधर - बोर्ड ' हे ।

आज हमारी भारतीय नारी " सास भी कभी बहु थी "
देख कर श्रवण की माँ बनने के लिए तैयार हे
मगर श्रवण की पत्नी बनने के लिए तैयार नही हे।

आज हमारे देश में 'वृध्धा आश्रम' ओर 'गौ शाला'
हमारी संस्कृति के ऊपर कलंक हे।

साधू संतो के ये देश में हम माँ बाप को
भूल कर भगवान की तलाश में भटक रहे हे।

अंतिमधाम
www.antimdham.com
+91-98255-23478